❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समय दानी आर्यजन कृपया ध्यान दें

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 में जो आर्यजन **कम से कम 7 दिन का समय** दान करना चाहें, वे अपना नाम, मो.न. तथा कब से कब तक का समय दान कर सकते हैं **9311721172** पर नोट करा देवें, जिससे सम्पर्क किया जा सके।- *संयोजक*

वर्ष 48, अंक 43 | एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 18 अगस्त, 2025 से रविवार 24 अगस्त, 2025
विक्रमी सम्वत् 2082 | सृष्टि सम्वत् 1960853126
दयानन्दाब्द : 202 | पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

ओ३म्

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200 वीं जयन्ती एवं आर्य समाज स्थापना के 150 वें वर्ष के अवसर पर वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प के साथ

आर्य समाज सार्द्ध शताब्दी

भारत की राजधानी दिल्ली में | विश्वभर के आर्यों का महाकुंभ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Thursday 30th October, Friday 31st October, Saturday 1st November, Sunday 2nd November 2025

30 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2025

कार्तिक शुक्ल पक्ष, ८-९-१०-११ विक्रमी सम्वत् २०८२ (गुरुवार-शुक्रवार-शनिवार-रविवार)

सम्मेलन स्थल : स्वर्ण जयंती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-85

आप सब इष्ट मित्रों व परिवार सहित सादर आमंत्रित हैं।

सुन्दर व्यवस्था हेतु सम्मेलन में आने से पूर्व समस्त आर्यजन अपना पंजीकरण अवश्य करा लेवें।
आगन्तुक महानुभावों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था आयोजकों की ओर से की जाएगी।
पंजीकरण हेतु लॉगइन करें - **www.aryamahasammelan.com**

समस्त आर्यसमाजों के अधिकारियों, सदस्यों एवं कर्मठ कार्यकर्ताओं की सेवा में

हार्दिक निमन्त्रण एवं व्यवस्थाओं हेतु आर्थिक सहयोग की अपील

माननीय महोदय,

सादर नमस्ते !

प्रभु कृपा से आप स्वस्थ एवं सानन्द होंगे।

आपको जानकार हर्ष होगा कि भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा शुभारम्भ किए गए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वें जयन्ती वर्ष एवं आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष - 'ज्ञान ज्योति महोत्सव' के विश्वव्यापी दो वर्षीय आयोजनों का भव्य समापन "**आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन**" के रूप में **गुरुवार 30 अक्तूबर से रविवार 2 नवम्बर, 2025** तक दिल्ली के **स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी** में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गठित 'ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति' एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। सारे देश में इसकी तैयारियां चल रही हैं। सम्पूर्ण भारत एवं विदेशों में इस हेतु जोर-शोर से बैठकें आयोजित की जा रही हैं। इस सम्बन्ध में आपसे निवेदन है कि -

★ अपनी आर्यसमाज के बाहर तथा **मुख्य मार्ग और चौराहों पर सम्मेलन के होर्डिंग** बनवाकर लगवाएं। होर्डिंग आप स्वयं भी बनवाकर लगा सकते हैं। होर्डिंग का डिजाइन सम्मेलन की वैबसाइट www.aryamahasammelan.com से डाउनलोड किया जा सकता है।

★ आपकी आर्यसमाज के जो अधिकारी एवं सदस्यगण महासम्मेलन में कार्यकर्ता के रूप में विभिन्न समितियों/ कार्यों में सहयोग करने के इच्छुक हों, उनके नाम एवं मो. नं. सम्मेलन कार्यालय को यथाशीघ्र भिजवा देवें।

- *शेष पृष्ठ 5 पर*

देववाणी-संस्कृत

मंगल मिलन

वेद-स्वाध्याय

यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम्। स्युष्टे सत्या इहाशिषः।।
-ऋ० 8।44।23
ऋषिः-आङ्गिरसो विरूपः।। देवता- अग्निः।। छन्दः - गायत्री।।

शब्दार्थ - **अग्ने** = हे प्रकाशस्वरूप! **यत् अहं त्वं स्याम्** = जब मैं तू हो जाऊँ **वा घ** = या **त्वं अहं स्याः** = तू मैं हो जाए तो **ते इह आशिषः** = तेरे इस संसार के वे सब आशीर्वाद **सत्याः स्युः** = सत्य, सफल हो जाएँ।

विनय- हे नारायण! तुम्हारी मङ्गलकामना प्राणिमात्र के लिए अनवरत हो रही है, तुम्हारे आशीर्वाद प्रत्येक जीव के लिए-अपने प्रत्येक पुत्र के लिए एक समान बरस रहे हैं, फिर भी ये अशीर्वाद हमें लगते नहीं हैं, हम पर अपना प्रभाव नहीं डालते इसके कारण यह है कि हम ही अपने-आपको इनसे वञ्चित रख रहे हैं। स्वार्थ, अहङ्कार, अस्मिता से हमने अपने आपको ऐसा बांध लिया है, ऐसा लपेट लिया है कि हम वास्तव में तुम्हारे परम निकट होते हुए भी तुमसे इतने दूर हो गये हैं कि हम पर तुम्हारी अशीर्वाद-वर्षा का कुछ भी प्रभाव नहीं होता। हे मेरे प्यारे! हममें दूरी करने वाला, हमें पृथक् रखने वाला, यह आवरण अब सहा नहीं जाता। अब तो यह पर्दा फट जाए, यह आवरण हट जाए और मैं तू हो जाऊँ या तू मैं हो जाए, तो मुझ पर बरसाये गये जीवन-भर के तेरे सब आशीर्वाद एक क्षण में सफल हो जाएँ, तथा जीवनभर में तुम्हारे प्रति की गई मेरी सब प्रार्थानाएँ एक पल में पूरी हो जाएँ। हे प्रभो! वह दिन कब आएगा! जब मैं तेरे ध्यान मे मग्न होकर अपने आपको खो दूँगा और दूसरी ओर तुम अपने परम प्यारे पुत्र को अपनी गोद में आश्रय दे दोगे; जब मेरा आत्मा अपने परम आत्मा को पा जाएगा और दूसरे शब्दों में हे परमात्मन्! तुम अपने एक चिवियुक्त अङ्ग को फिर अङ्गीकार कर लोगे; जब मेरी आत्मग्नि में जाकर 'मैं' को नष्ट कर देगी, अथवा जब तुम्हारे द्वारा मेरे स्वीकृत हो जाने से 'तुम' जाता रहेगा? तब मेरी कोई प्रार्थना न रहेगी, क्योंकि तब मेरा कोई स्वार्थ व कामना न रहेगी और इसलिए तब तुम्हारा कोई आशीर्वाद भी बाकी न रहेगा। उस मङ्गल-मिलन में तुम्हारे सब आशीर्वाद मूर्त्तिमन्त, सत्य, सफल हो जाएँगे। जीवन-भर में जो-जो मैंने तुमसे भक्तिमय प्रार्थनाएँ की हैं और उनके उत्तर में, उनकी स्वीकृति में, तुमसे मैंने जो नाना आशीर्वाद पाये हैं, वे सब-के-सब आशीर्वाद अन्ततः इसी महान् मङ्गल मिलन के लिए थे। मेरी सब प्रार्थनाओं की एक इच्छा और तुम्हारे मेरे प्रति सब आशीर्वचनों की एक इच्छा, यह मिलन ही थी। तुम्हारी मेरे कल्याण की सब-की-सब कामनाएँ, सब आशीर्वाद, इस आत्मप्राप्ति में एकदम पूरे हो जाते हैं, क्योंकि यही मेरा सबसे बड़ा कल्याण है, कल्याणों काकल्याण है, जिसमें सब कल्याण समा जाते हैं। अहो! वह मङ्गल मिलन, वह महान् मिलन!

-: साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

कुत्तों के प्रेमी दयालु हैं या निर्दयी?

दिल्ली एनसीआर के आवारा कुत्तों को शेल्टर होम भेजने के सुप्रीम कोर्ट के विरुद्ध प्रदर्शन

संसार में उभय योनी मनुष्य के अतिरिक्त सभी असंख्य योनियां भोगयोनि कहलाती हैं। अक्सर सुनने में आता है कि संसार में 84 लाख योनियां है,किंतु किसी ने गिनती नहीं की है, इससे कम या ज्यादा भी हो सकती है। पर एक बात अवश्य कही जा सकती है कि परमपिता परमात्मा द्वारा बनाई हुई इस दुनिया में समस्त पशु पक्षी, जीव जंतु, कीट पतंग इत्यादि सबका अपना-अपना महत्व है, संसार में एक तिनका भी व्यर्थ का नहीं है, यहां सबका अपना-अपना अस्तित्व है। जैसे सांप, बिच्छू, और अनेक अन्य जहरीले जीव वातावरण को शुद्ध बनाए रखने के लिए विष का संग्रह करते हैं, छिपकली हानिकारक मच्छरों को निगलती है, पानी में रहने वाली मछली पानी का शोधन करती है, मुर्गे-मुर्गी और सूवर आदि गंदगी को खाते हैं, दूसरी तरफ गाय, भैंस, बकरी आदि घास, फूस, पेड़, पौधों, औषधीय गुणवत्ता वाले बेल आदि के पत्तों को खाकर दूध प्रदान करते हैं। ये समस्त जीव जंतु, पशु-पक्षी परोपकार ही करते हैं। लेकिन इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये सब भोग योनियां अपने निर्धारित भोजन को ही खाते हैं और ईश्वर के नियम व्यवस्था के अनुसार वही मलिन गंदगी इनको पुष्टि भी प्रदान करती हैं। लेकिन ये कभी अपने आहार में परिवर्तन नहीं करते। इन पुश पक्षियों के आहार को ध्यान से देखें तो पता चलता है कि जितने हिंसक जीव हैं, मांसाहारी हैं, उनकी अलग पहचान है, और जितने शाकाहारी जीव हैं उनकी पहचान अलग है, शेर, बिल्ली, कुत्ता, भेड़िया आदि ये सब मांसाहारी हैं, इसलिए इनके नाखून और दांत नुकीले हैं, ये सब जीभ के सहारे चप-चप करके पानी पीते हैं, इसके विपरीत गाय भैंस, घोड़े, गधे आदि सब घूंट भर भरकर पानी पीते हैं, गाय, भैंस, घोड़े, बकरी आदि चाहे भूखे मर जाएं लेकिन वे मांस नहीं खा सकते और जो मांसाहारी हैं वे घास नहीं खा सकते।

संसार में सर्वश्रेष्ठ कही जाने वाली मनुष्य योनि में भी कुछ लोग अपने निर्धारित शाकाहार के साथ ही मूक पशुओं को मारकर उनका मांस खाने से भी परहेज नहीं करते, वे क्या-क्या खा लेते हैं, इस विषय पर जाएंगे तो यह एक अलग विषय बन जाएगा, किंतु यहां पर विचारणीय यह है कि अभी पिछले दिनों हिंसक जीवों में शुमार कुत्ते को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया कि दिल्ली एनसीआर के आवारा कुत्तों के लिए सरकार अलग शेल्टर होम तैयार करें, जहां पर इन्हें रखा जाए और बाहर खुले में न छोड़ा जाए। कोर्ट के इस आदेश को लेकर यकायक पशु प्रेमियों का समूह प्रदर्शन करने लगा, उनके भीतर संवेदनशीलता जाग उठी, ये सब दयालु लोग कुत्तों की वफादारी को लेकर मानवता की दुहाई देने लगे, इस विषय में सबके अपने अपने हेतु हैं, किन्तु यहां पर विचारणीय यह है की ईद, मुहर्रम आदि अवसरों पर करोड़ों पशुओं को मारकर खा लिया जाता है, क्या उनका दर्द-दर्द नहीं है, प्रतिदिन करोड़ों मुर्गे, मुर्गियां और अनेक अन्य पशु मारकर लोग खा जाते हैं, तब इनको जीवों के ऊपर दया क्यों नहीं आती और कोर्ट के आदेश के अनुसार कुत्तों को मारा थोड़े ही जा रहा है, उन्हें तो बड़े, बुजुर्गों, बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर एक स्थान पर उनके खान-पान और संरक्षण, चिकित्सा आदि की व्यवस्था की बात कही गई है, फिर भी यह लोग क्या दिखाना चाहते हैं कि ये सबसे बड़े दयावान हैं, परोपकारी हैं, संवेदनशील हैं, सजग हैं अथवा क्या ये केवल एक विरोधाभासी मानसिकता का ही परिणाम है, नहीं तो

यहां पर विचारणीय यह है कि अभी पिछले दिनों हिंसक जीवों में सुमार कुत्ते को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने अपने निर्णय में आदेश दिया कि दिल्ली एनसीआर के आवारा कुत्तों के लिए सरकार अलग शेल्टर होम तैयार करें, जहां पर इन्हें रखा जाए और बाहर खुले में न छोड़ा जाए। कोर्ट के इस आदेश को लेकर यकायक पशु प्रेमियों का समूह प्रदर्शन करने लगा, उनके भीतर संवेदनशीलता जाग उठी, ये सब दयालु लोग कुत्तों की वफादारी को लेकर मानवता की दुहाई देने लगे, इस विषय में सबके अपने अपने हेतु हैं, किन्तु यहां पर विचारणीय यह है की ईद, मुहर्रम आदि अवसरों पर करोड़ों पशुओं को मारकर खा लिया जाता है, क्या उनका दर्द-दर्द नहीं है, प्रतिदिन करोड़ों मुर्गे, मुर्गियां और अनेक अन्य पशु मारकर लोग खा जाते हैं, तब इनको जीवो के ऊपर दया क्यों नहीं आती और कोर्ट के आदेश के अनुसार कुत्तों को मारा थोड़े ही जा रहा है, उन्हें तो बड़े, बुजुर्गों, बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर एक स्थान पर उनके खान-पान और संरक्षण, चिकित्सा आदि की व्यवस्था की बात कही गई है, फिर भी यह लोग क्या दिखाना चाहते हैं कि ये सबसे बड़े दयावान हैं, परोपकारी हैं, संवेदनशील हैं, सजग हैं अथवा क्या ये केवल एक विरोधाभासी मानसिकता का ही परिणाम है, नहीं तो जो विरोध करने वाले हैं इनमें से भी अधिकांश लोग मांसाहारी हो सकते हैं, जब ये मुर्गे मुर्गी, मछली या भ्रूण हत्या के समान रोज चटकारे लेकर अंडे खाते हैं तब इनका पशु प्रेम कहां चला जाता है?

जो विरोध करने वाले हैं इनमें से भी अधिकांश लोग मांसाहारी हो सकते हैं, जब ये मुर्गे मुर्गी, मछली या भ्रूण हत्या के समान रोज चटकारे लेकर अंडे खाते हैं तब इनका पशु प्रेम कहां चला जाता है?

दरअसल कुत्ता प्रेमियों की ओर से दो न्यायाधीशों की पीठ के 11 अगस्त के आदेश को कुत्तों और जीवों के खिलाफ बताते हुए तत्काल रोक लगाने की मांग की गई जबकि दूसरी तरफ सरकार की ओर से पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने आदेश की तरफदारी करते हुए कहा कि आवारा कुत्ते बड़ी समस्या है, कोर्ट को इन मुखर कुत्ता प्रेमियों के अलावा चुपचाप सहने वाले लोगों की ओर भी ध्यान देना चाहिए। आवारा कुत्तों को पकड़ने के आदेश पर रोक नहीं लगनी चाहिए। कोर्ट ने दोनों पक्षों की दलीलें सुनकर अपना आदेश सुरक्षित रख लिया। हालांकि सुनवाई के दौरान कोर्ट की टिप्पणी थी कि पूरी समस्या का कारण स्थानीय प्राधिकरणों की निष्क्रियता है। सुप्रीम कोर्ट की दो न्यायाधीशों की पीठ ने गत 11 अगस्त को आवारा कुत्तों की समस्या पर स्वतः संज्ञान लेकर सुनवाई करते हुए तत्काल प्रभाव से दिल्ली

- शेष पृष्ठ 7 पर

मानव समाज की उन्नति में आर्य समाज का अमूल्य योगदान

– स्वामी डॉ. देवव्रत सरस्वती
अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य वीर दल

आर्य समाज कोई भिन्न मत, पन्थ सम्प्रदाय नहीं है। संसार का उपकार करना अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना उद्देश्य है।

आर्य समाज के इस आन्दोलन के फलस्वरूप सभी को वेद पढ़ने का अधिकार प्राप्त हुआ। आज शिक्षा के क्षेत्र में लड़कियाँ कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं, जाति–पाति अपने आप समाप्त होती जा रही हैं। भारत को विश्व गुरु बनाने का जो स्वप्न महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने देखा था उसके लिये केन्द्रीय सरकार भी प्रयासरत है।

इस वर्ष समस्त आर्य जगत् आर्य समाज की 150वीं जयन्ती मना रहा है। आईये आर्य समाज के स्वर्णिम इतिहास से प्रेरणा लेकर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र के समक्ष उपस्थित चुनौतियों को जान उनके समाधान में आर्य समाज के दायित्व की चर्चा करें।

आर्य समाज ने विगत वर्षो में सामाजिक उन्नति के लिये बहुत कार्य किया है। अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियाँ, जन्म से जाति प्रथा, स्त्री शिक्षा, दलित उद्धार, आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रणाली डी.ए.वी. विद्यालय, स्वाधीनता आन्दोलन आदि में आर्य समाज का उल्लेखनीय योगदान रहा है।

परन्तु सामाजिक उन्नति के मूल शारीरिक और आत्मिक उन्नति को भुला दिया गया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने यजुर्वेद पाठ्य **"कस्त्वा विमुंञ्चति. ..... कर्मणे वां वेषाय वाम्"** के भावार्थ में लिखते हैं–मनुष्य को दो प्रयोजन, कार्यो में प्रवृत होना चाहिये। पहला शरीर का अरोग्य, बल बढ़ाकर चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना करना, दूसरा सभी विद्याओं को पढ़कर उनका सर्वत्र प्रचार–प्रसार करना। धन एवं अन्य साधन इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति में साधन है, साध्य नहीं।

हमें इन दोनों अर्थात ब्रह्मतेज और छात्रशक्ति की प्राप्ति के लिये कटिबद्ध होना पड़ेगा। स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय सम्मुलास में जिस पाठविधि का उल्लेख किया है। उसी को आधार मानकर गुरुकुल और विद्यालय स्थापित करने होंगे। इसके दो विभाग होने चाहियें। प्रथम श्रेणी में आर्ष पाठ विधि के गुरुकुल होंगे जिनमें वेद शास्त्र, महर्षि दयानन्द के सिद्धांत एवं के मान्यताओं की प्रमाणिकता तथा वर्तमान समय में उनकी उपयोगिता को प्रचार–प्रसार करने वाले विद्वान बनाने होंगे। उनके शिक्षण और आगे योगक्षेत्र की पूरी व्यवस्था आर्य समाजों, प्रतिनिधि आर्य प्रतिनिधि सभाओं और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा की जानी चाहिए। प्रतिपक्षियों द्वारा स्वामी दयान्द और आर्य समाज पर किये जाने वाले आक्षेपों का उत्तर धर्मार्य सभा और विद्वान युक्ति प्रमाणों द्वारा दें, जो जन साधारण की समझ में आ सकें। यदि आवश्कता पड़े तो शास्त्रार्थ का भी आह्वान किया जाये। देश–विदेश में प्रचार करने हेतु उनकी भाषा के विद्वान् तैयार करने होंगे।

दूसरे प्रकार के ऐसे विद्यालय स्थापित किये जायें, अपना सभाओं द्वारा संचालित डी.ए.वी. एवं आर्य विद्यालयों में यदि छात्रवास की व्यवस्था है, तो योग्य संरक्षणों के मार्गदर्शन में, सन्ध्या, यज्ञ, व्यायाम, नैतिक शिक्षा और आर्य समाज की मान्यताओं को पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर आधुनिक शिक्षा दी जाये। धार्मिक, नैतिक शिक्षा की परीक्षाओं के अंको को भी अन्य विषयों के अंकों में जोड़ा जाये।

आज का युवक पश्चिम की आम संस्कृति और इलैक्ट्रोनिक मीडिया के कुचक्र में फंस गया है। कल ही समाचार पत्र में सूचना निकली कि एक किशोर ने 10 घण्टे मोबाइल देखने के पश्चात् गले में फन्दा लगाकर आत्महत्या कर ली। उसके माता–पिता मजदूरी करने गये थे। आज युवक–युवतियों में नशाखोरी बढ़ती जा रही है। पुरुषार्थ करने के स्थान पर येन–केन–प्रकारेण धन प्राप्ति और मौज–मस्ती करना ही उनका उद्देश्य रह गया है। वर्तमान प्रचलित धार्मिक आडम्बर और धर्माचार्यो तथा बाबाओं की लीला देखकर उनका ईश्वर से ही विश्वास उठ गया है और वह नास्तिक होता जा रहा है। उन्हें अपनी संस्कृति एवं राष्ट्र निर्माण के कार्यों में जोड़ने के लिए प्रत्येक आर्य समाज में आर्यवीर–वीरांगनाओं की शाखा लगनी चाहिये। जिनसे शारीरिक व्यायाम के अतिरिक्त बौद्धिक ज्ञान और सामाजिक समस्थाओं के समाधान पर चिन्तन किया जाये।

बच्चों को अच्छे संस्कार देने के लिये सुरुचि पूर्ण अच्छे साहित्य का लेखन, छोटे, छोटे ट्रैक्ट, चित्रों सहित कहानियाँ और महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग की पुस्तकें ओर इण्टरनेट के माध्यम से रचनात्मक एवं शिक्षाप्रद कार्यक्रमों को दिखाया जाये। आर्य सन्देश यह कार्य कर भी रहा है। उसका और भी विस्तार करने की आवश्यकता है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं वैदिक विद्या केन्द्र पुदुचेरी ने इस दिशा में स्तुत्य प्रयास किया है।

–शेष अगले अंक में

परिवर्तन : आता नहीं है – लाया जाता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी : एक संक्षिप्त जीवन परिचय

महर्षि दयानन्द की चिन्ता – मैं वेद विरुद्ध कार्य तो नहीं कर रहा ?

गतांक से आगे –

स्पष्टवादिता, सत्यवादिता को आधार बनाया, जो बोला मानव कल्याण को उद्देश्य बनाकर बोला, केवल हित के लिए, अहित के लिए नहीं, असर हुआ, लोग सुनने लगे, समझने लगे। जो दूर भागते थे, पास आने लगे। थे गुजराती, बोलते थे संस्कृत, पर जनहित राष्ट्रहित सामने रखा, हिन्दी में बोलने का आग्रह हुआ, जनहित में दयानन्द ने माना। केवल एक कौपीन' ही धारण करते थे, पर समाज में प्रचारार्थ पूर्ण वस्त्र धारण करने की सलाह मिली– वो भी मानी, अपनी बातों को लिखने का आग्रह स्वीकार करके' सत्यार्थ प्रकाश' जैसा कालजयी ग्रन्थ लिखा, संस्कार विधि, गोकरुणा निधि, व्यवहार भानु आदि अलग–अलग ग्रन्थ लिखे और सबसे महान् कृपा करते हुए ईश्वरीय ज्ञान वेद का भाष्य शुरु किया", वेद प्रकाशन के लिए प्रेस लगाई, वेद और संस्कृत पाठशाला प्रारम्भ की। जब बातें सीधे–सीधे कीं, जब बातें खरी–खरी कीं, तो विरोध होना तो स्वाभाविक था। विरोध हुआ– थोड़ा नहीं, बहुत हुआ, तो शास्त्रार्थ किए– अनेक शास्त्रार्थ (वाद–विवाद) हुए, सबसे हुए, हर विषय पर हुए। सत्य था, न हार सकता था, ना हारा। जब दयानन्द को शास्त्रार्थों से हराना सम्भव नहीं हुआ तो मारने के प्रयत्न हुए। एक दो नहीं, 10–20 नहीं, 44 बार मारने का प्रयत्न किया गया। पर नाम दयानन्द सार्थक हो रहा था। किसी के विरुद्ध को कार्यवाही नहीं, न ही करनी चाही। कभी सुरक्षा के लिए सिपाही नहीं चाहे– राजा ने देना चाहा, तो लिए नहीं, ईश्वर पर इतना विश्वास ! सब प्रचलित मतों का 'वेद' से मुकाबला किया। जो वेदानुसार है उसको ठीक और जो वेद के विरुद्ध है उसे मानव के लिए भी विरुद्ध ही माना। तर्क के साथ, बिना तर्क के नहीं, पर अंधविश्वासों को मानने वालों के लिए तर्क कहां ? यहां तो 'धर्म' व्यापार बन चुका था, बेचा जा रहा था। बेचने वाले भी थे– खरीदने वाले भी। दयानन्द तो इसके विरोधी थे। दयानन्द के लिए धर्म–व्यवहार है, व्यापार तो नहीं। अब मेल कैसे हो, जिसने सुना, चिन्तन किया, समझा– वह पीछे हो लिया। जो नहीं कर सका उसने पत्थर फेंककर अपनी संतुष्टि की। संन्यासी थे, सो संन्यास धर्म निभाया। न अपना स्थान बनाया, न निवास, न आश्रम। बनाना ही नहीं चाहा। अनेकों ने देना चाहा तो लिया नहीं, न बैंक खाता, न तिजोरी बना , न बक्से बनाए, न ताले लगाए। भला संन्यासी के लिए कैसा बंधन। न कोई पता (एड्रेस), आज तक कोई ये न जान सका, दयानन्द का पता क्या है, वे रहते कहां हैं? हमेशा प्रसन्नचित्त, चाहे कोई माने, न माने– दयानन्द को इस बात की चिन्ता नही थी। चिन्ता थी तो केवल एक बात की कि **"मैं वेद विरुद्ध कार्य तो नहीं कर रहा हूं?"**

भोजन मिला तो ठीक, जो मिला वो ठीक, भोजन नहीं मिला दु:खी नहीं, गंगा की रेती को बिस्तर बनाया, ईटों को तकिया बनाकर सोए, दु:खी नहीं हुए। विरोधियों ने ईंटें फेंकी–दु:खी नहीं हुए, सांप फेंके– दयानन्द डरे नहीं, तलवार से वार किए– तलवार तोड़कर फेंक दी, पर नाराज नहीं हुए। पत्थर फेंके गए–फूलों की वर्षा मान लिया, जहर दिया– देने वाले को छोड़ दिया, पर दु:खी नहीं हुए। यात्रा में पांव छिल गए–कट गए–फट गए, न तो दर्द हुआ, न विचलित हुए। शोर मचाकर रोशनी बुझाकर शास्त्रार्थों में हार घोषित करने के प्रयास में भी दयानन्द केवल मुस्कुराते रहे। विरोध और डर के चलते कभी किसी ने अपने निवास से कहीं और जाने को भी कहा, दयानन्द दु:खी नहीं हुए। गुरु को नहलाने के लिए यमुना से नित्य 10–12 घड़े भरकर लाने में दयानन्द न थके, न हारे, गुरु के हाथ की मार सहकर दयानन्द दु:खी नहीं हुए। नकली दयानन्द बनाकर गधे पर बैठाकर जुलूस निकाला जा रहा है, पर दयानन्द न परेशान हैं, न ही विचलित। पर, आसूं भी निकले, दु:खी भी हुए, नाराज भी हुए, क्रोधित भी हुए, विचलित भी हुए।

– क्रमश:

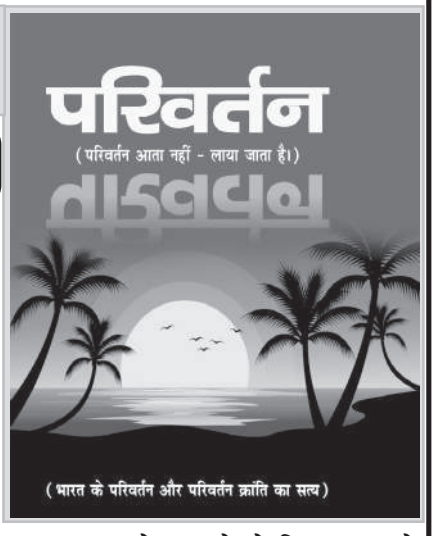

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001
मो. 09540040339, 011–23360150

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

18 अगस्त, 2025
से
24 अगस्त, 2025

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों के समापन समारोह

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली–2025

देश–विदेश में निरन्तर गतिशील हैं अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली हेतु निमन्त्रण बैठकें

नेपाल एवं ऑस्ट्रेलिया सहित दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचकर दिए गए आमन्त्रण

सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी दिनांक 16 अगस्त को नेपाल पहुंचे और नेपाल आर्यसमाज के आर्यजनों को महासम्मेलन में पधारने के लिए आमन्त्रित किया। इस अवसर पर नेपाल आर्य समाज के प्रधान श्री माधव प्रसाद एवं मन्त्री श्री तारानाथ मैनाली एवं अन्य अधिकारी एवं कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित रहे।

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली–2025 का बिगुल ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप में फूंका गया और आर्यजनों को आमन्त्रित करने के लिए श्री अजय कालरा जी आर्य प्रतिनिधि सभा ऑस्ट्रेलिया के कार्यालय पहुंचे। आस्ट्रेलिया सभा के प्रधान श्री योगेश आर्य जी एवं कार्यकर्ताओं ने आमन्त्रण स्वीकार किया।

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने आर्यसमाज नया बांस और महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश–2 को पधारने और सहयोग के लिए आह्वान किया। वहीं आर्य वीर दल की विभिन्न शाखाओं को आर्य वीर दल दिल्ली के महामन्त्री श्री बृहस्पति आर्य जी ने आमन्त्रित किया तथा प्रचार के लिए आह्वान किया।

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025

हार्दिक निमन्त्रण एवं व्यवस्थाओं हेतु आर्थिक सहयोग की अपील

⋆ महासम्मेलन को भव्य, सफल एवं व्यवस्थित बनाने के लिए आपके आर्थिक सहयोग की नितान्त आवश्यकता है। इस हेतु सम्मेलन की ओर से 200/-, 500/- और 2000/- रुपये के दान कूपन प्रकाशित कराए गए हैं। आप उनका प्रयोग धन संग्रह करने के लिए करें और यथाशीघ्र धन एकत्रित करके भेजें। कूपन प्राप्त करने के लिए श्री वीरेन्द्र सरदाना जी (9911140756) से सम्पर्क करें।

⋆ सब सदस्यों से आग्रह करें कि वे अपने परिवार के सब सदस्यों स्वयं, माता-पिता, बच्चों, विशेषकर युवाओं सहित अधिक से अधिक संख्या में पहुंचे। अपने साथ किसी नए व्यक्ति मित्र, सम्बन्धी को अवश्य लाएं।

⋆ जनसम्पर्क महा अभियान के अन्तर्गत गत समय में आपने जिन परिवारों/व्यक्तियों/महानुभावों से सम्पर्क स्थापित किया है, उन्हें सम्मेलन में पधारने के लिए अवश्य ही आमन्त्रित करें और अपने साथ लाने का प्रयास करें। साथ ही ऐसे परिवारों जिनका आर्यसमाज के साथ सम्बन्ध था, किन्तु वर्तमान में नहीं है, उन्हें भी इस सम्मेलन की सूचना देकर आमन्त्रित अवश्य करें।

⋆ विशेष रूप से जिन महानुभावों के बच्चे, परिजन विदेश में रहते हैं, उन्हें उपरोक्त तिथियों में दिल्ली पधारने का निमंत्रण दें, जिससे युवा पीढ़ी भी आर्य समाज के अभूतपूर्व और ऐतिहासिक सम्मेलन में सहभागी बनें और गौरव का अनुभव करें।

⋆ अपनी आर्यसमाज की ओर से **सम्मेलन के सम्बन्ध में एक पत्रक प्रकाशन** कराकर क्षेत्र में वितरित कराएं तथा सम्मेलन में पधारने के लिए स्थानीय महानुभावों को प्रेरित करें।

⋆ अपनी आर्यसमाज की ओर से स्मारिका में एक पृष्ठ का विज्ञापन अवश्य ही दें तथा विज्ञापन मैटर शीघ्र ही भेज दें। जिससे प्रकाशित होने वाली **स्मारिका में** आपकी आर्यसमाज की विशेष गतिविधियों का विवरण प्रकाशित हो और आर्यसमाज के इतिहास में आपकी संस्था का नाम अंकित हो सके। स्मारिका 20 अक्तूबर 2025 तक तैयार हो जायेगी और 23×36×8 साईज में प्रकाशित होगी। पूरे पृष्ठ का विज्ञापन साईज 7"×9.5" तथा आधे पृष्ठ का विज्ञापन साईज 7"×4.6"होगा। आप अपना चैक/ड्राफ्ट **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम केवल खाते में उक्त पते पर भिजवाकर कृतार्थ करें। विज्ञापन सामग्री एवं डिजाईन हमें 15 सितम्बर, 2025 तक अवश्य भिजवा देवें। कृपया अन्तिम समय का इन्तजार न करें। स्मारिका में विज्ञापन प्रकाशन हेतु दरें निम्न प्रकार हैं -

1. पूरा पृष्ठ (रंगीन)	50,000/-	2. आधा पृष्ठ (रंगीन)	25,000/-
3. पूरा पृष्ठ (B/W)	30,000/-	4. आधा पृष्ठ (B/W)	15,000/-
5. आवरण (अन्दर) (रंगीन-पृष्ठ 2-3)	2,50,000/-	6. अन्तिम आवरण (रंगीन-पृष्ठ 4)	2,50,000/-

⋆ यदि कोई सदस्य अपने माता-पिता अथवा अपने प्रियजन की स्मृति में भी फोटो सहित विज्ञापन देना चाहें तो भी दिए जा सकते हैं।

⋆ यदि कोई दानी सज्जन अपनी दान राशि पर आयकर छूट चाहते हों तो, उनसे **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक देने का अनुरोध करें। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर छूट प्राप्त है।** आप अपनी सहयोग/दान राशि सीधे निम्नांकित बैंक खाते में अथवा दिए गए स्कैन कोड/यूपीआई के द्वारा भी प्रदान कर सकते हैं-

DELHI ARYA PRATINIDHI SABHA
A/c No. 910010008984897 IFSC:UTIB0002193
Axis Bank, Connaught Place, New Delhi

कृपया अपनी दान राशि जमा कराते ही डिपोजिट स्लिप/स्क्रीन शॉट अपने नाम, पते, मो. नं. और पैन नं. के साथ श्री आशीष शर्मा जी 9540040388 को भेज दें, जिससे रसीद जारी की जा सके।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस महासम्मेलन में आपका एवं आपकी आर्यसमाज का सहयोग पहले से अधिक प्राप्त हो होगा। धन्यवाद सहित

भवदीय

(धर्मपाल आर्य)	(सुरेशचन्द्र आर्य)	(सुरेन्द्र कुमार आर्य)
महासम्मेलन संयोजक	प्रधान	अध्यक्ष
प्रधान, दिल्ली आ.प्र.सभा	सार्वदेशिक आ.प्र. सभा	ज्ञान ज्योति महोत्सव
मो. 9810061763	मो.9824072509	आयोजन समिति

असम राज्यपाल प्रतिभा प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत सिविल सेवा परिक्षाओं की तैयारियों हेतु
आर्यसमाज के आर्य प्रतिभा विकास संस्थान से दिल्ली में कोचिंग प्राप्त करेंगे असम के प्रतिभावान युवा

मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज शिक्षा सेवा के क्षेत्र में पिछले 150 वर्षों से निरंतर एक से बढ़कर एक कीर्तिमान स्थापित करता आ रहा है। परोपकार की इस महत्वपूर्ण श्रृंखला में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के अंतर्गत आर्य प्रतिभा विकास संस्थान द्वारा दिल्ली में पूरे भारत के प्रतिभावान छात्रों में से चयनित विद्यार्थियों को सिविल सेवा हेतु परीक्षा के लिए विशेष कोचिंग, आवास, भोजन की व्यवस्था लगभग पिछले 7 वर्षों से संचालित है, जिसमें विभिन्न राज्यों के प्रतिभावान छात्र सफलता प्राप्त करके भारत राष्ट्र की सेवा में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं। इस क्रम में असम राज्य के प्रतिभावान छात्रों को राज्यपाल असम प्रतिभा प्रोत्साहन योजना के माध्यम

से दिल्ली में रहकर सिविल सेवा के परीक्षा हेतु कोचिंग, भोजन और आवास की संपूर्ण व्यवस्था आर्य समाज की ओर से की जाएगी, इस हेतु 12 अगस्त 2025 को अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ के उप प्रधान श्री विनय आर्य जी ने असम के माननीय राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य जी से राज भवन में भेंट की और इस सम्बन्धी करार पर हस्ताक्षर किए। योजना के अन्तर्गत असम के 10 प्रतिभावान छात्रों को नि:शुल्क कोचिंग, आवास एवं भोजन की संपूर्ण व्यवस्था प्रदान करेगा आर्यसमाज। इस अवसर पर राज्यपाल महोदय को अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 में पधारने का आमन्त्रण भी दिया गया।

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली

भव्य स्मारिका का प्रकाशन : वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों महानुभावों से निवदेन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जयन्ती वर्ष एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष के आयोजनों -ज्ञान ज्योति महोत्सव के समापन के रूप में आयोजित **'आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मलेन, दिल्ली- 2025'** के अवसर पर प्रकाशित होने वाली **भव्य स्मारिका हेतु** वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों से आर्य समाज के अनछुए विषयों, समसामयिक विषयों एवं आर्य जगत की महान विभूतियों जिनके कार्यों को आजतक किसी ने नहीं जाना-पहचाना उनकी स्मृतियों को दृष्टिगत रखते हुए लेख आमन्त्रित किए जाते हैं।

इस सम्बन्ध में समस्त वैदिक विद्वानों, लेखकों एवं चिन्तकों महानुभावों से निवेदन है कि अपने लेख ए-4 पेपर पर बाएं साईड में कम से कम 2 इंच का हाशिया छोड़कर स्पष्ट अक्षरों में लिखकर या टाईप कराकर निम्न पते पर भेजें या ईमेल करें।

स्मारिका संयोजक, आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001 **Email:aryasabha@yahoo.com**

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025

पंजीकरण आरम्भ

इस ऐतिहासिक महासम्मेलन में भाग लेने हेतु पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। प्रत्येक आर्यजन का पंजीकरण आवश्यक है। पंजीकरण हेतु लॉगइन करें -
www.aryamahasammenan.com
पंजीकरण सम्बन्धी आवश्यक निर्देश पृष्ठ 7 पर दिए गए हैं। - ***संयोजक***

साप्ताहिक स्वाध्याय

स्वमन्तव्य-व्यामन्तव्य प्रकाश

गतांक से आगे-

42. '**स्वर्ग**' नाम सुखविशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का है।

43. '**नरक**' जो दु:खविशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का होना है।

44. '**जन्म**' जो शरीर धारण कर प्रकट होना सो पूर्व, पर और मध्य भेद से तीनों प्रकार का मानता हूं।

45. शरीर के संयोग का नाम '**जन्म**' और वियोगमात्र को '**मृत्यु**' कहते हैं।

46. '**विवाह**' जो नियमपूर्वक प्रसिद्धि से अपनी इच्छा करके पाणिग्रहण करना, वह 'विवाह' कहाता है।

47. '**नियोग**' विवाह के पश्चात् पति के मर जाने आदि वियोग में, अथवा नपुंसकत्वादि स्थिर रोगों में, स्त्री व पुरुष आपत्काल में स्ववर्ण वा अपने से उत्तम वर्णस्थ स्त्री वा पुरुष के साथ सन्तानोत्पत्ति करना।

48. '**स्तुति**' गुण-कीर्तन, श्रवण और ज्ञान होना; इसका फल प्रीति आदि होते हैं।

49. '**प्रार्थना**' अपने सामर्थ्य के उपरान्त ईश्वर के सम्बन्ध से जो विज्ञान आदि प्राप्त होते हैं, उनके लिए ईश्वर से याचना करना और इसका फल निरभिमान आदि होता है।

50. '**उपासना**' जैसे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं, वैसे अपने करना, ईश्वर को सर्वव्यापक, अपने को व्याप्य जान के ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है- ऐसा-ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात् करना, उपासना कहाती है; इसका फल ज्ञान की उन्नति आदि हैं।

51.**सगुणनिर्गुणस्तुतिप्रार्थनोपासना**' जो गुण परमेश्वर में हैं, उनसे युक्त और जो-जो नहीं हैं, उनसे पृथक् मानकर प्रशंसा करना '**सगुणनिर्गुणस्तुति**'; शुभगुणों के ग्रहण की ईश्वर से इच्छा और दोष छुड़ाने के लिए परमात्मा का सहाय चाहना '**सगुणनिर्गुण प्रार्थना**'; और सब गुणों से सहित, सब दोषों से रहित परमेश्वर को मानकर, अपने आत्मा को उसके और उसकी आज्ञा के अर्पण कर देना '**सगुणनिर्गुणोपासना**' होती है।

-क्रमश:

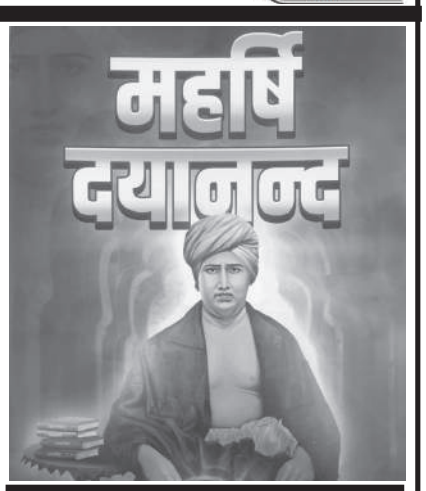

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुन: प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Swamantavya-Vyamantavya Prakash

11. 'Bandha due to ignorance. All the sinful deeds - worship of different Gods, ignorance etc., are all going to bring misery. That's why it is 'bondage' that which is not desired but has to be borned.

12. Mukti means getting rid of all the evils and wandering freely in the all-pervading God and, coming back to the world after enjoying the bliss of Mukti till the appointed time.

13. The means of 'muttif' are worship of God i.e. yoga practice, religious rituals, learning through celibacy, company of learned scholars, truthful knowledge, good thought and effort etc.

14.'Earth' {worldly objects like money etc.} is that which is obtained by righteousness, and that which is proved by unrighteousness is called 'Anartha'.

15. 'Kaam' is that which is achieved by religion and meaning.

16.I believe in 'Varnas-hram' on the merit of virtues and deeds.

17. He is called 'King', who has good qualities, deeds, is bright by nature, a servant of justice without bias, behaves like a father for the people considering them as sons, always tries to increase their progress and prosperity.

18.'Praja' is said to be those people who, by imbibing pious qualities, deeds, nature, by the use of justice-religion without any bias, loving the king and the people, without rebellion, with the king as his sons and daughter.

19.The one who always accepts the truth leaving untruth, removes the unjust and promotes the righteous, like his soul, wants everyone's welfare, he is 'just', I also consider him right.

20. Scholers are considered as 'Dev' and non-scholars as 'Asura', sinners as 'demons', immoral people as 'vampires'.

21.Dev Pooja means honouring the same scholars, mother, father, teacher, guest, just king and religious persons, husband virtuous husband and wife are, called on the contrary it is 'Adevpuja'. I consider their idols to be worshipable and other stone and inert idols to be absolutely un worshipable.

22. 'Source' with which knowledge, civilization, religiousness, Jitendriyatadi increase and un educated defects are left, that is called education.

23. 'Puranas' are the Atreyadi Brahmin-books created by Brahmadi. I consider them as Purana, Itihaas, Kalpa, Gatha and Narashansi, other Bhagwatadi etc.

24. Auspicious deeds 'pilgrimage' by which one can cross the ocean of evil, that which are truthful speech, education, satsang, Yamadi yoga practice, purusharth, Vidyadanadi auspicious deeds, I consider them as pilgrimage, and not other sealed to rivers places.

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

शोक समाचार

पं. सूर्यदेव शास्त्री जी का निधन

आर्यसमाज के विद्वान एवं आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी नई दिल्ली के धर्माचार्य पं. सूर्यदेव शास्त्री जी का दिनांक 15 अगस्त, 2025 की प्रात: अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से तिलक विहार शमशान घाट पर किया गया।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा सोमवार 25 अगस्त, 2025 को आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी में सम्पन्न होगी।

आचार्य सन्तोष शास्त्री जी को पितृशोक

पूर्वोत्तर भारत के असम, नागालैंड, त्रिपुरा आदि क्षेत्रों में अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में संलग्न आचार्य सन्तोष शास्त्री जी के पूज्य पिता श्री मुनुवा गौड़ जी का दिनांक 8 अगस्त, 2025 को बोकाजान, कार्बी आंग्लांग (असम) में अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 23 अगस्त, 2025 को बोकाजान स्थित उनके आवास पर सम्पन्न होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज हनुमान रोड
नई दिल्ली-110001

प्रधान	:	श्री नरेन्द्र सिंह हुड्डा
उपप्रधान	:	श्री अरुण प्रकाश वर्मा
मन्त्री	:	श्री संजय कुमार
कोषाध्यक्ष	:	श्रीमती रश्मि वर्मा

आर्यसमाज सुन्दर विहार
दिल्ली-110087

प्रधान	:	श्री सतीश कुमार
मन्त्री	:	श्री भूपेन्द्र कुमार
का. मन्त्री	:	श्री संजीव आर्य
कोषाध्यक्ष	:	श्री प्रह्लाद सिंह आर्य

आर्यसमाज साकेत
नई दिल्ली-110017

प्रधान	:	श्रीमती सतीश आर्या
मन्त्री	:	श्री मंजीत कुमार
कोषाध्यक्ष	:	डॉ. अर्जुनदेव तनेजा

आर्यसमाज हडसन लाइन
किंग्जवे कैम्प, दिल्ली-110009

प्रधान	:	श्री सुरेन्द्र पाल चौधरी
मन्त्री	:	श्री दविन्दर कुमार
कोषाध्यक्ष	:	श्री देशबन्धु यादव

आर्यसमाज दिलशाद गार्डन
दिल्ली-110095

प्रधान	:	श्री सत्यपाल अरोड़ा
मन्त्री	:	श्री नरेश प्रताप सिंह

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2025 दिल्ली के अवसर पर

वानप्रस्थ और संन्यास-दीक्षा समारोह

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली - 2025 के अवसर पर गत सम्मेलनों की भांति वानप्रस्थ और संन्यास ग्रहण करने के लिए वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा का भव्य कार्यक्रम आयोजित होगा, जो आर्य महानुभाव इस ऐतिहासिक अवसर पर आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी, वैदिक विद्वानों से वानप्रस्थ अथवा संन्यास की दीक्षा लेना चाहते हों, इस कार्यक्रम में सादर आमन्त्रित हैं।

दीक्षा के इच्छुक महानुभाव कृपया अपना विवरण 'संयोजक, यज्ञ समिति' के नाम सम्मेलन कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001 के पते पर भेजें, ताकि उनके संस्कार की समस्त व्यवस्था बनाई जा सके। महासम्मेलन आयोजन समिति इस कार्यक्रम को विशेष प्रकार से आयोजित करेगी।

- ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति

पृष्ठ 2 का शेष

कुत्तों के प्रेमी दयालु हैं या निर्दयी?....

एनसीआर की सड़कों से आवारा कुत्तों को हटाने और उन्हें डॉग शेल्टर में रखने के आदेश दिए थे।

इस आदेश पर कुत्ता प्रेमियों और एनजीओ ने कड़ी प्रतिक्रिया जताई थी। एक संगठन की ओर से भारत के प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) के समक्ष मामले का जिक्र करते इसी मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट के एक पूर्व भिन्न फैसले का जिक्र करते हुए सुनवाई की मांग की थी जिस पर सीजेआई ने मामला तीन न्यायाधीशों की नयी पीठ को भेज दिया था।

गुरुवार को न्यायमूर्ति विक्रम नाथ, संदीप मेहता और एनवी अंजारिया की नयी पीठ ने सुनवाई की। दिल्ली सरकार की ओर से सालिसिटर जनरल तुषार मेहता ने आवारा कुत्तों को सड़कों से हटाने के आदेश पर रोक का विरोध करते हुए कहा कि लोकतंत्र में एक मुखर वर्ग होता है और एक चुपचाप सहने वाला। आदेश पर रोक की मांग कर रहे लोग मुखर हैं लेकिन कोर्ट को चुपचाप सह रहे लोगों के बारे में भी सोचना चाहिए। ये बड़ी समस्या है जिसका समाधान होना चाहिए। बच्चे मर रहे हैं। कुत्तों की नसबंदी से उनकी रैबीज फैलाने की क्षमता खत्म नहीं होती। कोई भी जानवरों से नफरत नहीं करता। मेहता ने कहा कि एक वर्ष में कुत्तों के काटने के 37 लाख घटनाएं होती हैं। उन्होंने डब्लूएचओ के आंकड़े बताते हुए कहा कि हर साल 305 मौतें होती हैं ज्यादातर बच्चे 15 साल से कम उम्र के हैं। कुत्तों को मारने की जरूरत नहीं है उन्हें अलग करने की जरूरत है। कुत्तों के डर से माता-पिता बच्चों को बाहर खेलने नहीं भेजते। यह मुखर अल्पसंख्यक दृष्टिकोण बनाम मूक बहुसंख्यक पीड़ित दृष्टिकोण है। जबकि प्रोजेक्ट काइंडनेस नामक एनजीओ की ओर से पेश कपिल सिब्बल ने आवारा कुत्तों को पकड़ने के आदेश पर रोक की मांग करते हुए कहा कि वह पहली बार सुन रहे हैं कि नियम कानून हैं लेकिन उनका पालन नहीं हो सकता।

सिब्बल ने कहा कि आदेश में कुत्तों को शेल्टर होम में रखने को कहा गया है लेकिन सवाल है कि क्या कुत्तों के शेल्टर होम हैं। उनकी नसबंदी व टीकाकरण का पर्याप्त इंतजाम है। कहते हैं कि शेल्टर होम से कुत्ते छोड़े नहीं जाने चाहिए। ऐसे तो कुत्ते मर जाएंगे। अभिषेक मनु सिंघवी, सिद्दार्थ लूथरा ने भी उस आदेश पर रोक लगाने की मांग की। जबकि मुंबई के ब्रीचकैंडी अस्पताल में भर्ती व्यक्ति की ओर से पेश वकील ने कहा कि है कोर्ट को कुत्तों के काटने की समस्या पर विचार करना चाहिए। पीठ ने सुनवाई के दौरान टिप्पणी करते हुए कहा कि संसद नियम कानून बनाती है, लेकिन उन पर अमल नहीं होता। एक तरफ इंसान पीड़ित है दूसरी तरफ पशु प्रेमी हैं। कोर्ट ने कहा कि जिन लोगों ने हस्तक्षेप अर्जी दाखिल की है उन्हें कुछ जिम्मेदारी लेनी होगी।

कोर्ट के आदेश की अवहेलना और कुत्ता प्रेमियों का प्रलाप देखकर यह स्पष्ट हो गया है कि आजकल समाज में सामूहिक हानि-लाभ, सुख-दुःख, पर विचार न करते हुए केवल अपनी-अपनी ढ़पली और अपना-अपना राग है। कोर्ट के आदेश के खिलाफ प्रदर्शनकारी तो केवल अपनी-अपनी सोच रहे हैं। क्योकि इनमे से ज्यादातर सेलीब्रेटी हैं जो अपनी मंहगी गाड़ियों में चलते हैं, उन्हे आम, साधारण आदमी की परेशानी क्या पता कि जब गलियों में, पार्कों में अवारा कुत्तों का झुंड किसी अकेले बुजुर्ग को, बच्चे को, स्त्री को, रात को नौकरी पर जाने-आने वाले को घेरकर काटते हैं, तब उन पर क्या गुजरती है? जब किसी का बच्चा कुत्ते के काटने से पागल होकर लाइलाज होकर मरता है, तब उस घर में क्या हाल होता है? इन्हें तो बस अपनी झूठी दिखावटी दयालुता प्रदर्शित करनी है। चाहे ये स्वयं मांसाहारी हों, रोज दूसरे जीवों को बेरहमी से मारकर अपनी जीभ के स्वाद को पूरा ही क्यों न करते हों? इसलिए इन कुत्ता प्रेमियों को यह अवश्य सोचना चाहिए कि कोर्ट के फैसले का विरोध करके हम क्या सिद्ध करना चाहते हैं, दयालुता या निर्दयता।

-संपादक

ओ३म्
आर्यसमाज स्थापना के 150वें वर्ष
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी
अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, 2025
30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025
स्वर्ण जयंती पार्क, सैक्टर 10, रोहिणी, नई दिल्ली 110085
पंजीकरण प्रारंभ
वेबसाइट पर आज ही अपना पंजीकरण करें
www.aryamahasammelan.com
पंजीकरण हेतु उपयोगी निर्देश

जत्था (Group) बनाऐं
परिवहन के साधन, आगमन प्रस्थान के समय, आवास चयन, संस्था आदि के आधार पर प्रतिभागियों के अलग-अलग जत्थे बनाएं।

जत्था नायक (Group Leader)
बेहतर प्रबंध हेतु छोटे-छोटे जत्थे बनाएँ (जैसे 25 सदस्य) और प्रत्येक जत्थे का जत्था नायक चुनें।

जत्थे के सदस्यों का पंजीकरण
एक-एक करके जत्थे के सभी सदस्यों का पंजीकरण करें। सभी का अलग-अलग मोबाईल नंबर देंगे तो बेहतर रहेगा।

आवास
प्रत्येक जत्थे की आवश्यकता अनुसार निःशुल्क अथवा सशुल्क आवास चुनें। अपने आवास की व्यवस्था स्वयं भी कर सकते हैं।

आगमन / प्रस्थान
प्रत्येक जत्थे के परिवहन के साधन, आगमन / प्रस्थान के समय और स्थान की सूचना देवें। यह जानकारी टिकट बुक होने के बाद भी दे सकते हैं।

पंजीकरण संख्या
सफल पंजीकरण के बाद प्रत्येक सदस्य की पंजीकरण संख्या उसके मोबाईल नंबर पर भेज दी जाएगी।

कृपया 30 सितम्बर 2025 तक सभी जानकारी अवश्य डाल देवें ताकि हम आपको अच्छी से अच्छी सुविधाएं उपलब्ध कर सकें

प्रत्येक आर्यसमाज एवं आर्यजन करें प्रचार

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्यजनों अनुरोध है कि सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तिथियां नोट करें ले और सोशल मीडिया तथा प्रिंट मीडिया के प्रत्येक प्लेटफार्म पर इसका प्रचार करें। आर्यसमाजें अपने साप्ताहिक सत्संगों में नियमित रूप से इसकी सूचना दें, अपने आर्यसमाज की बैठक आमन्त्रित करें और समिति गठित करें तथा समाज के प्रत्येक सदस्य को सपरिवार पहुंचने के लिए प्रेरित करें। इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को भव्य, विराट एवं ऐतिहासिक बनाने में आप सबका सहयोग सादर अपेक्षित है। *ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति*

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन
30-31 अक्तूबर एवं 1-2 नवम्बर, 2025
स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी, सैक्टर-10, दिल्ली-110085

पुस्तक विक्रेता स्टाल बुक कराएं

महासम्मेलन स्थल पर वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए साहित्य प्रचार स्टाल लगाए जाएंगे। इन स्टॉलों पर केवल वैदिक साहित्य, प्रचार सामग्री, यज्ञ सम्बन्धित सामग्री आदि ही विक्रय की जा सकेगी। इस पुस्तक बाजार में भोजन, चाय-पानी, नाश्ते आदि के स्टाल नहीं लगाए जा सकेंगे। स्टालों की संख्या सीमित रहेगी, जोकि पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर दिए जाएंगे। चार से अधिक स्टाल बुक कराने वाले विक्रेताओं को अपने स्टाल पर अनिवार्य रूप से अग्निशमन यन्त्रों की व्यवस्था करनी होगी। स्टाल बुकिंग शुल्क 5000/- रुपये निश्चित किया गया है, जिसका भुगतान नगद/चैक/बैंक ड्रॉफ्ट अथवा RTGS/NEFT के माध्यम से निम्नांकित बैंक खाते या दिए गए स्कैन कोड द्वारा कर सकते हैं।

Delhi Arya Pratinidhi Sabha
A/c No. 91001000898489 7 IFSC:UTIB0002193
Axis Bank, Connaught Place, New Delhi

स्टाल बुकिंग करवाने अथवा अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए **संयोजक (स्टाल) श्री संजीव आर्य जी (9868244958)** से सम्पर्क करें। - ***संयोजक***

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025

भव्य स्मारिका का प्रकाशन

समस्त आर्यजनों, संस्थाओं/आर्य समाजों/पारिवारों से विज्ञापन सहयोग आमन्त्रित

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन - 2025 दिल्ली के अवसर पर भव्य स्मारिका का प्रकाशन किया जाएगा। इस स्मारिका के लिए समस्त आर्यजनों, संस्थाओं, आर्यसमाजों एवं आर्य परिवारों से विशेष विज्ञापन सहयोग आमन्त्रित किए जाते हैं। यदि आप अपना कोई शुभकामना सन्देश विज्ञापन, अपनी संस्था/आर्य समाज की जानकारी अथवा अपने माता-पिता, सगे-सम्बन्धी का परिचय या अपने परिवार के सम्बन्ध में सामग्री प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो विज्ञापन के रूप में अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि और कार्य का परिचय दे सकते हैं। विज्ञापन दरें इस प्रकार हैं-

1. पूरा पृष्ठ (रंगीन)	50,000/-	2. आधा पृष्ठ (रंगीन)	25,000/-
3. पूरा पृष्ठ (B/W)	30,000/-	4. आधा पृष्ठ (B/W)	15,000/-
5. आवरण (अन्दर) (रंगीन-पृष्ठ 2-3)	2,50,000/-	6. अन्तिम आवरण (रंगीन-पृष्ठ 4)	2,50,000/-

विज्ञापन प्रकाशित कराने या अधिक जानकारी के लिए '**स्मारिका संयोजक**', 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 को लिखें/9311721172 पर सम्पर्क करें या aryasabha@yahoo.com पर ई-मेल करें। - **संयोजक**

⑧ साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 18 अगस्त, 2025 से रविवार 24 अगस्त, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 21-22-23/08/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20 अगस्त, 2025

सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली: 30 अक्तूबर से 2 नवम्बर, 2025

रेल यात्रा के माध्यम से दिल्ली आने वाले आर्यजन कृपया ध्यान दें

28 अगस्त से करवाए जा सकते हैं रेलवे टिकट आरक्षण

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती एवं 150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष- ज्ञान ज्योति महोत्सव के समापन के रूप में आयोजित **आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2025** की तिथियां **30 अक्तूबर से 2 नवम्बर 2025** (बृहस्पतिवार से रविवार) सुनिश्चित हैं। इस अवसर पर दिल्ली पधार रहे समस्त आर्यजनों की सुविधा हेतु सूचित किया जाता है कि **रेलवे आरक्षण 60 दिन पूर्व 28 अगस्त से** ही आरम्भ हो जाएंगे, कृपया इसका ध्यान रखते हुए रेलवे आरक्षण कराएं। जिन स्थानों से किन्हीं विशेष दिनों में ही ट्रेन चलती हैं और उनकी ट्रेन दिल्ली 28 या 29 अक्तूबर को दिल्ली पहुंचती है तो उनके लिए विशेष रूप से सम्मेलन स्थल पर ही आवास एवं भोजन व्यवस्था 28 की रात्रि से उपलब्ध कराई जाएगी। महासम्मेलन स्थल पर पहुंचने के लिए दिल्ली के प्रमुख रेलवे स्टेशनों – नई दिल्ली, दिल्ली जंक्शन, हजरत निजामुद्दीन एवं आनन्द विहार रेलवे स्टेशनों से दिल्ली मैट्रो की सेवाएं ली जा सकती है। **मैट्रो की यैलो लाईन आने वाले रोहिणी सैक्टर-18-19 तथा रैड लाइन मैट्रो से आने वाले रिठाला मैट्रो स्टेशन** पर उतरकर सम्मेलन स्थल पर पहुंचें। आप कहां से, कब और कितने बजे पहुंच रहे हैं, इसकी सूचना अपने ग्रुप लीडर के माध्यम से ग्रुप लीडर के नाम, पते, फोन नं. और ग्रुप में आने वाले सदस्यों की सूची बनाकर सम्मेलन कार्यालय के पते '**15 हनुमान रोड नई दिल्ली-110001**' पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें।अपने ईमेल/पत्र पर 'आवास व्यवस्था हेतु' अवश्य लिखें। अधिक जानकारी लिए **9311721172** से सम्पर्क करें।

– ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति

प्रतिष्ठा में,

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली

ऐतिहासिक रूप से भव्य, सुव्यवस्थित एवं सफल बनाने हेतु

दिल खोलकर दान दें

आर्यसमाज सार्द्ध शताब्दी अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, दिल्ली-2025 को ऐतिहासिक रूप से भव्य, सुव्यवस्थित, सफल बनाने के लिए समस्त आर्यसमाजों, प्रान्तीय सभाओं, आर्य प्रतिष्ठानों, शिक्षण संस्थानों, आर्य परिवारों एवं औद्योगिक घरानों से सहयोग की अपील की जाती है। कृपया दिल खोलकर दान दें।

अपनी दानराशि का सहयोग **"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा"** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से भेजें अथवा निम्नांकित बैंक खाते में सीधे जमा कराएं। स्कैन कोड द्वारा भी दान राशि प्रदान की जा सकती है। कृपया दान राशि जमा कराते ही डिपोजिट स्लिप/स्क्रीन शॉट **9540040388** पर व्हाट्सएप्प भेजें, जिससे आपको तत्काल दान की रसीद भेजी जा सके।

Delhi Arya pratinidhi Sabha
A/c No. 910010008984897 IFSC:UTIB0002193
Axis Bank, Connaught Place, New Delhi

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह